साइक की धुन या विरोध की गूंज

नंदिनी राव

अफ्रीका के गांव में मूक विरोध का एक नायाब नमूना देखने को मिलता है। इस गांव की परम्परा के अनुसार हर लड़की को ब्याह के समय तोहफ़े में एक लाठी दी जाती है। इस लाठी को *साइक* कहते हैं। ब्याह के बाद लड़की ससुराल जाकर इस *साइक* को अपने घर के एक कोने में सीधा खड़ा कर देती है। इसके बाद उसकी सामान्य ज़िंदगी शुरू होती है।

शादी शुदा ज़िंदगी के दौरान अगर उसके ससुराल वाले या पति कोई ऐसा व्यवहार करते हैं जिससे उसे शारीरिक या मानसिक रूप से चोट या तकलीफ़ पहुंचती है तब इस *साइक* के इस्तेमाल की नौबत आती है। जी नहीं आप गलत समझ रहे हैं यह मारने-पीटने के उपयोग में नहीं लाई जाती।

कोई नागवार वाकया गुज़रने पर औरत प्रतिरोध के रूप में इस *साइक* को खामोशी से उठाकर घर से बाहर निकल जाती है। घर छोड़कर वह इस *साइक* के साथ गांव की चौपाल पर जाकर बैठ जाती हैं। गांव की अन्य औरतें यह देखकर अपनी-अपनी *साइक* उठाकर उस महिला का साथ इस विरोध में देने के लिए चौपाल पर जा बैठती हैं। चौपाल पर सभी औरतें एक साथ मिलकर आपस में बातें करती हैं। गीत गुनगुनाती है और खामोशी से अपनी विरोध जताती हैं।

औरतों के इस व्यवहार से गांव की ज़िंदगी थम जाती है। घरों के चूल्हे ठंडे पड़े रहते हैं, घर के सदस्यों को खाना-पीना नहीं मिलता, बच्चों, ढोर-ढंगरों की देखभाल नहीं होती तथा खेतों का काम भी ठप्प पड़ जाता है। औरतों के इस साझे प्रतिरोध से हिंसा करने वाले व्यक्ति और उसके परिवार पर दबाव पड़ता है। औरतें चौपाल पर तब तक डटी बैठी रहती हैं जब तक अत्याचार करने वाला परिवार या तकलीफ़ पहुंचाने वाला व्यक्ति चौपाल पर आकर सभी औरतों के सामने अपनी गलती मानते हुए पत्नी से माफी नहीं मांगता।

मामला निपट जाने के बाद औरतें अपनी *साइक* उठाकर अपने-अपने घरों को लौट जाती हैं। ज़िंदगी दोबारा अपने नियमित ढर्रे पर लौट आती है। गांववासी राहत की सांस लेते हैं।

इस छोटी सी सीधी साधी परम्परा की अहम बात यह है कि यह औरतों के अहिंसक विरोध का एक प्रखर रूप है। यह औरतों पर होने वाल जुर्म की साझी मुखालफ़त का बेहतरीन उदाहरण है जिसका समाधान भी साझा ही है।

साइक अहिंसक विरोध का सशक्त प्रतीक है जिसका हम औरतों को अंगीकरण कर लेना चाहिए। हमें चाहिए कि हम आम-सामान्य जीवन जीने से इंकार करें जब तक हमें न्याय नहीं मिलता और दोषी अपनी गलती दोबारा न दोहराने का वादा नहीं करता। इस साझे मूक प्रतिवाद की गूंज इतनी सशक्त है कि हिंसा करने वाला सर उठाने से पहले दस बार सोचने पर मजबूर हो जाएगा।